धार्मिक भावनाओं से उपर उठते हुए आध्यात्मिकता को अंगीकार करें-स्वामी ब्रह्मदेव

आबू रोड, 17 फरवरी, निसं। वर्तमान समय बदल रहे धर्म की परिभाषा से समाज में धार्मिक भावनायें आहत हो रही है। यदि समाज में एकता और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से एक बेहतर समाज की स्थापना करनी है तो उसके लिए धार्मिक प्रवृत्ति से उपर उठते हुए आध्यात्मिकता को स्थान देना चाहिए। उक्त उदगार ब्रह्म विद्यामठ त्रिनिदाद के स्वामी ब्रह्मदेव उपाध्याय ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज शांतिवन के विशाल डायमंड हॉल में ज्ञान योग शिविर में देशभर से आये बीस हजार लोगों को सम्बोधित कर रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय विरासत सामाजिक एकता में है न कि आपसी भेदभाव में। धर्म की परिभाषा के विभाजन के कारण ही आपसी वैमनस्यता को बढ़ावा मिल रहा है। आध्यात्मिकता की क्रान्ति ही सर्व मनुष्यात्माओं को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। संस्था द्वारा जो ज्ञान दिया जा रहा है उसमें कहीं भी संदेह और असमानता की गुंजाईश नहीं बनती है। इसलिए इसे सभी धर्मों और वर्गों के लोगों को स्वीकार करते हुए एक मंच पर आकर वैश्विक एकता का साझा प्रयास करना चाहिए। उन्होंने वर्तमान सामाजिक हालात पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि लगता ही नहीं कि समाज में कहीं भी निष्ठा, ईमानदारी और मूल्यों के लिए जगह नहीं है। ऐसे में परमात्मा का यह ज्ञान अलौकिक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा।

इस अवसर पर संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनोहिनी ने कहा कि हम सब एक परमात्मा की संतान है और हमारे बीच में कभी दैहिक, धार्मिक तथा व्यवसायिक दिवारें आडे. नहीं आनी चाहिए। जब तक हम मानवीय संवेदनाओं को अपने अंदर स्थान नहीं देंगे तब तक उनको जीवन में उतारना एक बड़ी चुनौती ही रहेगी। यह समय परमात्मा द्वारा नयी दुनिया की स्थापना का है। इसलिए सभी मनुष्याआत्माओं को परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कर एक नये जीवन का सूत्रपात करना चाहिए। तभी जीवन का मकसद सार्थक हो सकेगा। उन्होंने उपस्थित लोगों से एकजुट होकर अपराध मुक्त समाज बनाने की अपील की तथा सदैव एकता के सूत्र में पिरोये रहने की शुभकामनायें दी।

इससे पूर्व स्वामी ब्रह्मदेव संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी से मुलाकात करने के पश्चात संस्था के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वेर अतिरिक्त महासचिव ब्र. कु. बृजमोहन, संस्था के मीडिया प्रवक्ता ब्र. कु. करूणा, कार्यकारी सचिव ब्र. कु. मृत्युंजय समेत संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारियों से मुलाकात की।

फोटो, 17 एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4 वक्तव्य प्रस्तुत करते स्वामी तथा सभा में उपस्थित लोग